

दुःखों की खेती का त्याग

- (१) सीमित अहंकार (२) सीमित ममता
(३) सीमित कामना (३) सीमित प्रेम।

यह चार 'सीमित भाव' ही दुःखों की खेती के बीज हैं और दिमागी रोगों के मूल कारण हैं।

(१) दिमागी रोगों की वृद्धि करने वाले सीमित अहंकार का स्वरूप और उसके परिणाम का ज्ञान

मैं ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का प्रिय पुत्र आनन्द-स्वरूप आनन्दमय हूँ, इस ब्रह्मज्ञान युक्त व्यापक और दिव्य अहंकार को धारण न करके जो मनुष्य अज्ञानी नारी-नरों द्वारा प्राप्त सीमित अहंकार को धारण करते हैं वे नारी-नर ॐ आनन्दमय प्रभु के युवराज पद से वंचित रहते हैं।

“हे श्री शान्तिमय प्रभो ! मैं अनन्त, अपार, असीम भावमय हूँ, क्षुद्रतम जीवभावमय नहीं।” यह ब्रह्मवेत्ताओं का ब्रह्मवाक्य है (२/२४-२५)। इसके अतिरिक्त हजारों प्रकार के सीमित अहंकार अज्ञान विमोहित पापात्माओं द्वारा और पारिवारिक जनों द्वारा प्राप्त होते आए हैं, (*) जो द्वेष और चिन्ता-शोक आदि दिमागी रोग वर्द्धक हैं।

दुःखों की खेती का त्याग (१)



COLLECTION OF VARIOUS
-> **HINDUISM SCRIPTURES**
-> **HINDU COMICS**
-> **AYURVEDA**
-> **MAGZINES**

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!



KAPWING



COLLECTION OF VARIOUS
-> **HINDUISM SCRIPTURES**
-> **HINDU COMICS**
-> **AYURVEDA**
-> **MAGZINES**

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!



KAPWING

(*) मैं ब्राह्मण, मैं क्षत्रिय, मैं वैश्य, तू शूद्र, चमार और दुर्बल नारी। मैं साधु-संन्यासी, मैं हिन्दू, मैं इस्लामी, मैं ईसाई इत्यादि अनेकों उपाधियाँ आत्मज्ञान से अनभिज्ञ गुरुओं से प्राप्त होती आयी हैं, ये सब सीमित अहंकार के अन्तर्गत हैं। मैं माता, मैं पिता, मैं पदाधीश इत्यादि पारिवारिक तथा सामाजिक अहंकार हैं। इस प्रकार के अहंकार ही छोटे-बड़े नारी-नरों के दिमाग को रोगी बनाने वाले हैं।

व्यापक अहंभाव को धारण करने के फलस्वरूप मनुष्य भगवत् पद का पात्र बनता है। भगवत्-पद पूर्ण आनन्द का, स्थायी दिव्य शान्ति का तथा भगवत् कृपा-शक्ति का केन्द्र है और मोक्ष दायक है। इस परम पद के बालक-बालिकाओं सहित सभी मनुष्य अधिकारी हैं (†)।

(†) व्यापक अहंता के श्रद्धालु भक्तजन भीतरी-बाहरी शरीर द्वारा होने वाले संयम, सेवा, जप-ध्यान आदि समस्त सात्त्विक कर्म श्री ध्यानमग्न तत्त्वदर्शी भगवत् पदाधीश की आज्ञानुसार करने में संलग्न रहते हैं। श्री गीता अ० ६/१६-१७; ९/२७-२८ आदि।

सीमित अहंकार की रक्षा-वृद्धि करने वाले नारी-नर भगवत् दण्ड के पात्र बनते जाते हैं। उनके दिमागी कोश में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी कामनाओं से युक्त ईर्षा जनित मानसिक अग्नि प्रज्वलित रखते हैं। उस कामाग्नि के ताप द्वारा नारी-नर क्रमशः दुःखी-अशान्त होते जाते हैं। सीमित अहंकार १२५ दिमागी रोगों में मुख्य रोग है।

(२) दिमागी रोगों की वृद्धि करने वाली सीमित ममता का स्वरूप और उसके परिणाम का ज्ञान

इस चराचर विश्व के रचयिता और स्वामी ॐ आनन्दमय प्रभु पिता हैं। वे भोग-बुद्धि युक्त सकामी मनुष्यों के लिए न्यायकारी हैं, शठ बुद्धियुक्त क्रोधी मनुष्यों के प्रति केवल दण्डदायक हैं, आदेश ग्रहीता निष्कामी भक्तों के प्रति दयामय हैं एवं ब्रह्मदर्शी ज्ञानी महात्माओं के प्रति प्रेममय आत्मस्वरूप हैं। ऐसे ॐ श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का मैं प्रिय पुत्र हूँ, इस सात्त्विक ज्ञान से विश्व के समस्त मनुष्य मेरे पारिवारिक जन हैं अतः श्री प्रेमास्पद ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के आदेशानुसार भीतरी-बाहरी शरीर द्वारा होने वाले संयम, सेवा, जप, ध्यान आदि समस्त सात्त्विक कर्म करते हुए, यथा ज्ञान-शक्ति, यथा पात्र सबका हित करते रहना मेरा कर्तव्य है। यह “व्यापक ममता” के भाव हैं। व्यापक ममता के प्रभाव से मन शान्त और प्रसन्न रहता है।

दुःखों की खेती का त्याग (३)

उपरोक्त व्यापक ममता के भावों का त्याग कर जो मनुष्य अधिकार में दिए हुए धन-जन आदि पदार्थों का और अपने तन का स्वयं स्वामी बन जाता है अर्थात् मधु-मक्खियों की रानी के सदृश उन प्रेमी-पदार्थों पर मेरे-पन के भावों को आरोपित कर लेता है उसको 'सीमित ममता' युक्त कहा जाता है।

सीमित ममता के भावों को धारण करने वाले नारी-नर आय-व्यय और सेवा-भोग आदि समस्त कर्म ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के आदेशानुसार नहीं करते।

मैं-मेरे के भावों को धारण करने वाले नारी-नर भगवत् विधान के त्यागी होकर स्वेच्छाचारी हो जाते हैं।

स्वेच्छाचारी नारी-नर ॐ श्री न्यायाधीश जी के दण्ड-विधान से चिन्ता, क्रोध आदि दिमागी रोगों द्वारा पीड़ित रहते हैं। उनका मन उन्हें अशान्त और अप्रसन्न रखता है।

(३) दिमागी रोगों की वृद्धि करने वाली सीमित कामना
का स्वरूप और उसके परिणाम का ज्ञान

इतने धन, जन, भूमि भवन आदि पदार्थों पर मेरा अधिकार हो जाए और मैं उक्त सौंदर्य-ऐश्वर्य के आसरे से अपनी सात इन्द्रियों को और अपने मन को शान्त व प्रसन्न करता रहूँ। इस प्रकार के राजसी भाव-आचरणों से पर हिंसा होती है जो दुःख-अशान्ति वर्द्धक है। यह रोगी दिमागी युक्त नारी-नरों का ज्ञान है और अपने पतन का साधन है।

दुःखों की खेती का त्याग

(४)

उपरोक्त प्रकार की सीमित कामनाएँ करना ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का आदेश नहीं है। स्वतंत्रता पूर्वक आय-व्यय करके स्वयं भोग विलास करना भगवत् विधान में वर्जित है (कामात् प्रणश्यति श्रीगीता अ० २/६२-६३)।

प्रश्न— भगवन् ! ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का क्या आदेश है?

समाधान— अ० २/४७ से ५१ तक प्रकाशित है।

**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥**

- (१) भगवत् जेल-दण्ड के श्रद्धालु भक्तजन फल के उद्देश्य से कर्म न करें (मा कर्मफल हेतुः)।
- (२) भगवत् जेल से मुक्त होने के श्रद्धालु भक्तजन श्री भगवत् पदाधीश की आज्ञानुसार समता युक्त समस्त कर्म करने में अपना अधिकार समझें (कर्मणि एवं अधिकारः)।
- (३) भगवत् पद के श्रद्धालु भक्तजन अपने तन सहित धन, जन आदि समस्त पदार्थों पर अपना अहंता-ममता जन्य अधिकार न रखें (मा अधिकारः फलेषु कदाचन)।

(४) भगवत् दण्ड के श्रद्धालु भक्तजन अकर्मण्य न रहें।
यथा ज्ञान-शक्ति संयम, सेवा, जप, ध्यान और युक्त
आहार-विहार आदि कर्मों में प्रवृत्त रहें (अकर्मणि)।

(५) भगवत् प्रेम के श्रद्धालु भक्त अपने तन सहित
समस्त पदार्थों से और सुन्दर-सुडौल आज्ञाकारी
मनुष्यों से राजसी प्रेम न करें (सङ्ग मा अस्तु)।

स्मृति रहे ! यह संक्षेप से ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का
आदेश है। भगवत् पद दायक विधान का विस्तार पूर्वक ज्ञान
श्रीगीता अ० ११/५५ से अ० १२/२० तक प्रकाशित है।
और भगवत् जेल दायक कर्मों का अर्थात् त्याग करने योग्य
कर्मों का ज्ञान अ० १६/४ से २० तक प्रकाशित है।

सर्वभूत हितकारी व्यापक कामना का ज्ञान श्री विश्वशान्ति
ग्रन्थ भाग १ के पृष्ठ ९५-९६ पर प्रकाशित है।

हे प्रिय आत्मन् ! दिमागी कोश की सम्पत्ति दायक और
विपत्ति दायक, दोनों प्रकार का विधान “ज्ञानवीर दिमाग”
नाम १६ पृष्ठों के ग्रन्थ में प्रकाशित है।

(४) दिमागी रोगों की वृद्धि करने वाले सीमित प्रेम का
स्वरूप और उसके परिणाम का ज्ञान

दुःखों की खेती का त्याग (६)

हमारी देह और दिमाग के निर्माता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी हैं, इस सिद्धान्त से हम सब उनकी सन्तान हैं। इस सात्त्विक ज्ञान के अनुसार समस्त विश्व ही हमारा परिवार है। यह व्यापक प्रेम के भाव हैं। व्यापक प्रेम की मग्नता में मस्त रहना हमारा कर्तव्य है। परन्तु रोगी दिमाग युक्त नारी-नरों का ज्ञान है कि जितने मनुष्यों पर अपनी ममता है, उनकी सेवा-रक्षा तो प्रेम पूर्वक हो और अन्य के साथ घृणा, वैर, ईर्ष्या आदि विभिन्न प्रकार के भाव-आचरण हों अथवा शठ-विद्या युक्त तामसी व्यवहार हो, यह मानव प्रेम नहीं पशु-पक्षीवत् प्रेम है। इस सीमित प्रेमभाव से कलह जनित सामाजिक रोग बढ़ते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप जीवन द्वेषमय और शोकमय हो जाता है।

हे प्रिय आत्मन् ! आप स्वयं विचार करें कि सभी मनुष्य प्रेम के उपासक हैं परन्तु दो मनुष्यों में अटूट प्रेम किनका है? आप किस मानव पर नाराज़ नहीं होते? स्मृति रहे ! जिस समय चित्त में नाराज़गी का प्रादुर्भाव होता है उस समय दिमागी कोश का प्रत्येक संकल्प हानिकारक होता है। चित्त की नाराज़गी पापों की जननी है और चित्त की समता धर्म की माता है।

व्यापक प्रेम विद्या के पारदर्शी महात्माजन अपने दिमाग को सदा-सर्वदा सम, शान्त और प्रसन्न रखते हैं।

“हे प्यारे प्रेमियों ! मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम-रूप को मत भूलो, मुझे सर्वत्र, सब रूपों में और अपने हृदय, दिमाग में मानों।” यह व्यापक प्रेम की वृद्धि का प्रथम पाठ है। दिमागी रोग नाशक सच्ची प्रेम विद्या का पूर्ण पाठ श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (१) के पृष्ठ २८ से ३७ तक प्रकाशित है।

व्यापक प्रेम विद्या का फल अर्थात् प्रमाण पत्र श्री गीता अ० २/५४ से ५९ के सदृश सैकड़ों श्लोकों में प्रकाशित है, जो वरदान स्वरूप है। ॐ शान्तिमय

दिव्य पदार्थ

दिव्य अहंकार, व्यापक ममता, सात्त्विक कामना और आत्म प्रेम यह चार दिव्य पदार्थ अखण्ड आनन्द-शान्ति और ब्रह्मपद-शक्ति युक्त मोक्ष दायक हैं, यही निरोगी दिमाग के लक्षण हैं।

श्री गीता में पद और जेल का ज्ञान

(श्री गीता का सार तत्त्व)

(*) श्री गीता ग्रन्थ में वर्णित सात्त्विक नामक कर्म ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के पद के द्योतक हैं।

(*) श्री गीता शास्त्र में वर्णित राजसी नामक कर्म ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की जेल के बोधक हैं।

(*) श्री गीता ग्रन्थ में वर्णित तामसी नामक कर्मों को महाघोर कारावास दायक समझना चाहिए।

(*) श्री गीता शास्त्र में वर्णित गुणातीत नामक ब्रह्मवाक्य परम पद का वाचक है।

(१) आसुरी, अहंता, ममता, कामना और राजसी प्रेम रहित, निरहंकारी दया-प्रेम पूर्वक, कर्मयोग-ध्यानयोग जनित आनन्द-शान्ति युक्त आत्मिक प्रसन्नता में मग्न रहना, यह लक्षण ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के पद के द्योतक हैं, जो सात्त्विक नामक कर्मों का फल है।
(श्री गीता अ० २/४७, ६१, ६४; ६/२७) (*)।

- (२) आदेशदाता-मालिक बनने की कामना युक्त चिन्ता-शोक और द्वेष-नाराजगी जनित दिमागी अग्रियों द्वारा दुःखी-अशान्त रहना, यह चिह्न ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की जेल के बोधक हैं। जो राजसी नाम कर्मों का दण्ड भोग है (२/६२) (‡)।
- (३) तामसी बुद्धियुक्त क्रोध और रुदन की ज्वाला से उबलते रहना, यह चिह्न ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के महाघोर कारावास निवासी मनुष्यों के हैं। जो प्रायः राज-विधान विरुद्ध किए हुए तामसी नामक कर्मों का दण्ड भोग है (२/६३) (×)।
- (४) समाधियोग युक्त अखण्ड आनन्दमय कोष में निमग्न हो जाना अर्थात् अभेद भावयुक्त अमृतमय आत्मिक आनन्द में नित्य तृप्त रहना, यह लक्षण ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के स्थायी परम पद युक्त श्री गुणातीत महापुरुषों के हैं (श्रीगीता अ० २/६५; ३/१७; ६/२८-२९) (†)।

(*) पद दायक सात्विक श्लोकों की संख्या- श्री गीता अ० १८/ २०, २३, ३०, ३३, ३६-३७ और १८/५० से ५४। यह निरोगी दिमाग के लक्षण हैं।

(‡) जेल दायक राजसी श्लोकों की संख्या- श्री गीता अ० १८/ २१, २४, २७, ३१, ३४, ३८। यह रोगी दिमाग के लक्षण हैं।

दुःखों की खेती का त्याग (१०)

(*) महाघोर कारावास दायक तामसी श्लोकों की संख्या— श्री गीता अ० १८/२२, २५, २८, ३२, ३५, ३९। यह असाध्य रोगी दिमाग के लक्षण हैं।

(†) परम पद युक्त श्लोकों की संख्या— श्री गीता अ० २/५१, ५४ से ५६; १४/२१ से २५; १५/५; १८/२६, ५५। यह दिमागी रोगों के श्री चिकित्सक देव के लक्षण हैं।

स्मृति रहे ! भगवत् जेल और पद दायक उपरोक्त श्लोकों के अतिरिक्त श्रीगीता अध्याय १४, अध्याय १६ और अध्याय १७ में विस्तारपूर्वक ज्ञान प्रकाशित है। तथा उपरोक्त विधि-विधान का ही कथन समस्त गीता में है।

उपसंहार

श्री गीता शास्त्र में आदि से अन्त तक मुख्यता निम्नाङ्कित दो प्रकार के ही विधान का ज्ञान प्रकाशित है।

- (१) ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के पद एवं परम पद को प्राप्त करने के विधि-विधान का ज्ञान श्री गीता शास्त्र में है।
- (२) ॐ शान्तिमय भगवान् की जेल को एवं महाघोर कारावास को प्राप्त करने के विधि-विधान का ज्ञान श्री गीता शास्त्र में है।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।

जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ २/५१ ॥



(१)



(२)

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।



(१)



(२)

इस लोक में “देव और असुर” ←

दो ही ← प्रकार के (द्वौ, एव) मनुष्य हैं।

स्मृति रहे ! निरोगी दिमाग युक्त देव पद को प्राप्त करने में अथवा रोगी दिमाग युक्त असुर पद को प्राप्त करने में मनुष्य की स्वतंत्रता है।

कर्म तत्त्वज्ञ श्री विधानाचार्य भगवान् ने गीता शास्त्र में देव और असुर नामक मानव समुदाय के ही सात्त्विक, गुणातीत और राजसी, तामसी नाम से चार भेद किए हैं। उन्हीं को इस लेख में पद व परम पद तथा जेल एवं महाघोर कारावास के नाम से समझाया है। यही गीता का सार तत्त्व है।

स्मृति रहे ! देव, महादेव और असुर, राक्षस नामक देहधारी व्यक्तियों का आकाश में निवास नहीं है। उपरोक्त चार श्रेणियों के श्रेष्ठ अथवा कनिष्ठ गुण-ज्ञान युक्त मानव समुदाय का ही वाचक है। देव-असुर विषयक विस्तृत ज्ञान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (२) के “वर्ण-धर्म का ज्ञान” नामक लेख में प्रकाशित है।

श्री गीता के श्रद्धालु भक्तों की स्मृति हेतु पद और जेल विषयक कुछ श्लोकों का उल्लेख उपरोक्त टिप्पणी में किया है।

☞ समस्त गीता के मुख्य श्लोकों की व्याख्या श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (२) में प्रकाशित है। उक्त लेख का नाम “श्री गीता दर्शन” है जो श्रद्धा-प्रेम पूर्वक मनन-विचार करने योग्य है।

हाँ ! स्मृति रहे, ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की सच्ची प्रेम-भक्ति करने का विधि-विधान श्री विश्वशान्ति (भाग १) में प्रकाशित है। ॐ

दिव्य विज्ञापन

श्री गीता शास्त्र के श्रद्धालु भक्तजन निम्नाङ्कित श्री दिव्य ग्रन्थों को अवश्य प्राप्त करें।

(१) श्री मद्भगवद्गीता तत्त्वविवेचनी

(२) कर्मयोग का तत्त्व

पता— गीता प्रेस (गोरखपुर)।

गुण-बम का ज्ञान

- (१) प्रेम वृद्धि के दो बम- अनुगत सेवा और शुश्रूषा।
- (२) द्वेष-वैर बढ़ाने का एक बम- प्रतिकूल आचरण।
- (३) मानव भाग्य को उदय करने के दो बम- कर्मयोग युक्त निरहंकारी दया-प्रेम और समता।
- (४) परमानन्द और परम-शान्ति के दो बम- श्री समाधिमग्न महापुरुषों की आज्ञा से सेवा और जप-ध्यान।
- (५) दुःख और अशान्ति के बम क्या हैं? – जाली अहंकार युक्त आदेश-दाता मालिक बनने के विचार।
- (६) कलह नाश के दो बम- व्यक्तिगत संग्रह को सेवा में अर्पण करना और अहंभाव का त्याग करना (*)।

(*) स्मृति रहे ! कामी-क्रोधी नारी-नरों के अधिकार में धन-सम्पत्ति देने का परिणाम होगा कैसा?– नाग-नागिन को दूध-मिश्री सेवन कराने के जैसा।

(') क्रोधी मनुष्यों को गृह स्वामी व आदेशदाता बनाने का परिणाम होगा कैसा?– “गाय-भैसों” के समीप शेर-शेरनी का निवास कराने के जैसा।

दुःखों की खेती का त्याग

(१४)

- (७) पतन कारक दो बम- ईर्ष्या और द्वेष।
 (८) विश्वनाश के दो बम- एटम और हाईड्रोजन।
 (९) विश्वशान्ति के दो बम- श्री योगसिद्ध महामंत्र
 ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

- (१०) अन्धश्रद्धा के नाश का एक बम- स्वर्ग-नरक आदि
 लोकों की मिथ्या गाथा श्रवण कराने वाले नारी-नरों
 की निन्दा करना (*)।

(*) स्मृति रहे ! द्वेष भाव पूर्वक की हुई निन्दा के प्रभाव
 से अपनी बुद्धि तामसी हो जाती है। तामसी बुद्धि दिमागी
 शक्ति की राख बनाने वाली है।

- (११) सर्वनाश के दो बम- श्री ध्यान-समाधिमग्न देव-
 देवाङ्गनाओं की निन्दा और अपमान करना।
 (१२) अज्ञान के नाश और ज्ञान के विकास का एक बम-
 श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ।
 (१३) बुद्धि को तामसी बनाने का प्रथम बम- राज विधान
 विरुद्ध राक्षसी कर्मों द्वारा आर्थिक आय करना।
 (१४) दिमाग को विध्वंस करने वाला बम क्या है?—
 श्री गीता अ० १६/४ से २० तक प्रकाशित भोग-
 विलास कामी प्रेम को और वर्जित ममता अहंकार
 को आदर देना। ॐ शान्तिमय



COLLECTION OF VARIOUS
-> **HINDUISM SCRIPTURES**
-> **HINDU COMICS**
-> **AYURVEDA**
-> **MAGZINES**

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!



KAPWING



COLLECTION OF VARIOUS
-> **HINDUISM SCRIPTURES**
-> **HINDU COMICS**
-> **AYURVEDA**
-> **MAGZINES**

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!



KAPWING

श्री दिव्य वाणी

हे प्रिय आत्मन् ! इस ब्रह्मवाटिका में सभी नारी-नर ज्ञानवीर और गुणवीर प्रसिद्ध होने के इच्छुक हैं परन्तु आदेशदाता होने की निरहंकारी राज विद्या को और आदेश ग्रहीता होने की शिक्षा को अपने विचारों द्वारा अध्ययन किए बिना जीवन को कलह-क्लेशमय बना देते हैं।

स्मृति रहे ! सेवा कर्ताओं के समीप निवास करने की और सेवा ग्रहीताओं को समीप रखने की दिव्यगुणमयी राजविद्या को अध्ययन करने का ज्ञान अपने दिमागी कोश से प्राप्त करते रहना परमावश्यक है। अन्यथा—

जाली ममता-अहंकार के प्रेम से विमोहित छोटे-बड़े नारी-नर आपके मन, बुद्धि और इन्द्रियों में भोग-विलास की तथा मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा की कामनाओं की जाग्रति करते रहेंगे। और चिन्ता, क्रोध आदि १२५ अग्रियों द्वारा आपकी दिमागी शक्ति की राख बना देंगे कैसी?

→ श्री गीता अ० ९/१२; २/६३; १८/३५ आदि श्लोकों में प्रकाशित कठिन दण्डदायक विधान धारा के जैसी।

हे प्रिय आत्मन् ! अपने दिमाग को ज्ञानवीर और गुणवीर बनाने योग्य श्री विश्वशान्ति आदि २१ ग्रन्थों का एक सेट अवश्य प्राप्त करें। मूल्य सेवा साधारण है।

ॐ शान्तिमय

दुःखों की खेती का त्याग

(१६)